चुम्बक चिकित्सा द्वारा रोगोपचार

पंचतत्व के मानव शरीर में, विशेष प्रकार की जैव विद्युत तरंगें, शरीर के विभिन्न अंगों से, हथेली और पैर के तलवों की ओर निरंतर प्रवाहित होती रहती हैं। इनके द्वारा ही जैव क्रियाओं का नियमन होता है। यदि शरीर के किसी भाग में इस धारा का प्रवाह अनियमित हो जाता है, तो वहाँ दर्द अनुभव होता है। शारीरिक व्याधियों को दूर करने के लिए चुंबकीय चिकित्सा एक अनूठी विधि है जो पूर्णत: प्राकृतिक है और रोगी को दवाई, गोली या इंजेक्शन से दूर रखती है। इस चिकित्सा के माध्यम से हम शरीर की जैव विद्युत तरंगों के प्रवाह को नियमित करके निरोग रह सकते हैं। चुंबकीय चिकित्सा पद्धति रक्तसंचार, दर्द, जोड़ों की अकड़न आदि तकलीफों को दूर करने में कारगर सिद्ध हुई है। टूटी हुई हड्डी को जोड़ने और रक्त के जमाव को कम करने के लिए भी इस चिकित्सा के अच्छे परिणाम मिले हैं।

इसके लिए दर्द या रोग वाले हिस्से पर चुंबक का स्पर्श तथा विद्युत चुंबकीय इलेक्ट्रॉड का स्पर्श कराया जाता है जिसके द्वारा विद्युतीय धारा प्रवाहित होने लगती है। सुस्त पड़ी हुई रक्त कोशिकाएँ, माँसपेशियाँ, ग्रंथियाँ और नाड़ीतंत्र पुन: क्रियाशील होने लगते हैं। रक्त के थक्कों को कम करने के कारण, धमनियों और शिराओं में रक्त का सामान्य प्रवाह बनाने में यह क्रिया सहायक होती है। फलस्वरूप, लाल रक्त कोशिकाओं की संख्या शरीर में बढ़ने लगती है। हीमोग्लोबिन का रक्तवाहिकाओं में तीव्र प्रवाह होना प्रारंभ हो जाता है जिससे शरीर में एक ऊर्जा-सी महसूस होने लगती है और धीरे-धीरे वह हिस्सा संपूर्ण स्वस्थ हो जाता है। रक्त वाहिकाओं में कैल्शियम और कोलेस्ट्रॉल के जमाव में कमी आने लगती है। जैविक द्रव्यों का बहाव बढ़ जाता है तथा मस्तिष्क, हृदय और माँसपेशियों में शक्ति का संचार होने लगता है। थकान और आलस्य जैसे कारण दूर हो जाने से पाचन तंत्र, श्वसन तंत्र और नाड़ी तंत्र सक्रिय हो जाते हैं। 'चुंबकीय चिकित्सा' से सुषुप्त कोशिकाएँ पुनर्जीवित होने लगती हैं। बीमारी ठीक होने लगती है और शरीर में रोग प्रतिरोधक श्वेत रक्त कोशिकाओं की उत्पत्ति बढ़ जाती है जिससे बैक्टीरिया आदि जीवाणु शरीर पर आक्रमण नहीं कर पाते। चुंबक का निरंतर प्रयोग करने वाले व्यक्तियों का शरीर अधिक उम्र में भी युवा दिखाई देता है।

कोशिकाओं के पुनर्जीवन के फलस्वरूप इस पद्धति से घाव आदि शीघ्र ठीक हो जाते हैं। टूटे हुए पेशी तंतु शीघ्र जुड़ जाते हैं। शरीर में बनने वाले 'अपद्रव्यों' को शीघ्र विसर्जित करने में यह विधि सहायक है।

चूँकि इस विधि से रक्त प्रवाह सुचारु रूप से होने लगता है, उसमें प्राणवायु (ऑक्सीजन) की मात्रा बढ़ जाती है अत: दमा और फेफड़ों की अन्य बीमारियों को ठीक करने में भी यह लाभदायक है। दाँत, कान, सिर का दर्द, पेशियों का दर्द, शरीर की अकड़न, मूत्र

विसर्जन और मासिक धर्म में पीड़ा के निवारण के लिए चुंबकीय चिकित्सा अत्यंत लाभदायी सिद्ध हुई है। चुंबकीय चिकित्सा के साथ-साथ राजयोग मेडिटेशन का भी अभ्यास किया जाए तो परिणाम और भी अधिक सकारात्मक मिलने लगते हैं क्योंकि योग द्वारा विभिन्न अंगों का तनाव कम होकर जैविक क्रियाएँ स्वत: सामान्य होने लगती हैं। चुंबक के ऊपर कुछ समय पानी की बोतल रखकर व तैयार चुंबकीय जल पीने से शरीर में अद्भुत रक्त संचार होता है। दूध, फलों का रस, मालिश का तेल आदि द्रव्यों को भी चुंबकीयकृत करके प्रयोग करने से अधिक लाभ मिलता है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा संचालित आबू पर्वत स्थित ग्लोबल हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेन्टर में चुंबकीय चिकित्सा को एक परंपरागत चिकित्सा पद्धति के रूप में अंगीकार किया गया है। इस विभाग में विविध प्रकार के अनूठे उपकरण, जैसे अलग-अलग पावर के चुंबक, विद्युत चुंबक, इलैक्ट्रो मैग्नेटिक मल्टीपोल पल्स मैग्नेटिक बेड फोर्स, विविध प्रकार के मसाजर्स जैसे मैग्नेटिक मसाजर, बॉडी मसाजर, मल्टीफंक्शनल फिंगर मसाजर आदि-आदि हैं। यहाँ अनेक बीमारियों के इलाज के आशाजनक परिणाम मिले हैं। अक्तूबर, 1991 से दिसंबर, 2007 तक 1,56,000 व्यक्तियों ने लाभ लिया। इनमें से अनेक राजयोग के नियमित अभ्यासी भी बन गए। शास्त्रों में गायन है –

मूकम् करोति वाचालम्।
पंगु लंघयते गिरिम्।
यत्कृपा तहम्हम् वन्दे।
परमानन्द माधवम्।।

भावार्थ है कि परमात्मा की कृपा से गूंगा बोलने लगता है और लंगड़ा पहाड़ चढ़ने लगता है। सारी सफलताओं के पीछे शक्ति करनकरावनहार परमात्मा की है। उनके मार्गदर्शन में, एक अपंग व्यक्ति कैसे चलने-फिरने में सक्षम हुआ, वह अनुभव लिख रहा हूँ –

दस साल पहले, मुंबई निवासी श्री कोंडे, अपने बच्चों के लिए दूध लाने जा रहे थे। अचानक एक ट्रक ने उन्हें जोर से टक्कर मारी, वे बेहोश हो गए। तुरंत उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया। वे लकवे के शिकार हो गए, डॉक्टरों ने ठीक होने की संभावना से इंकार कर दिया। इन दस सालों में करीब बीस अस्पतालों में परामर्श तथा इलाज कराया गया किंतु सफलता नहीं मिली। फिर उन्होंने तांत्रिक-मांत्रिक एवं पक्षी तथा पशुओं के रक्त की मालिश की किंतु सफलता हासिल नहीं हुई। वे बैठने-उठने, चलने तथा बोलने आदि में असमर्थ थे, पूर्ण दिनचर्या बिस्तर पर किसी के सहयोग से पूर्ण होती थी। एक बार उन्होंने 'ज्ञानामृत' मासिक पत्रिका पढ़ी जिसके द्वारा उन्हें चुंबकीय चिकित्सा की प्रेरणा मिली। श्रीमती कोंडे ने ग्लोबल हॉस्पिटल में चुंबक चिकित्सा विभाग का अवलोकन किया था और कई व्यक्तियों के इलाज के अनुभवों को भी सुना था। फिर निश्चय किया कि बाबा के हॉस्पिटल में पति को लाकर इलाज कराना है। ग्लोबल हॉस्पिटल में चुंबक चिकित्सा विभाग में 4 अक्तूबर, 2006 को उन्हें भरती किया गया। वे पूर्णत: अपंग थे। दो व्यक्तियों के सहारे, व्हील चेयर से उन्हें इस विभाग में लाया गया। अलग-अलग उपकरणों से दिन में दो बार इलाज किया जाता रहा। उन्हें शरीर के अंदर शक्ति का संचार होता हुआ महसूस होने लगा। एक मास पश्चात् बैठने के साथ-साथ खड़े होने की कोशिश करने लगे। दो मास के बाद वे वॉकर के सहारे चलने लगे। कुछ दिनों बाद बिना वॉकर के सहारे के चलने की कोशिश शुरू की। खुशी की बात यह है कि वे बोलने भी लगे तथा स्मरण शक्ति भी वापस आ गई। इस सफलता को देखते हुए पूरा परिवार खुश हो गया। उन्होंने शिव बाबा को तथा ग्लोबल हॉस्पिटल को शुक्रिया अदा किया। निराकार जादूगर स्वयं शिव परमात्मा पिता ने यह असंभव कार्य संभव कराया जिसमें हम सेवाधारियों को दुआओं का खजाना प्राप्त हुआ। ❑